**प्रेस विज्ञप्तिः**

# *फॉन्टवालाः स्टोन टु मोबाइल, अब क्या बचा?*

द्वारा राजीव प्रकाश खरे और शुभ्रा प्रकाश

## एक शो जो देवनागरी स्क्रिप्ट के पाषाण काल से डिजिटल रूप में विकास के सर्वे पर आधारित है.

कलाइडोस्कोप डिजिटल आर्ट- केडीए और क्यूरेटर मुक्ता अहलूवालिया प्रस्तुत करते हैं जानकारीपरक डिजिटल आर्ट शो *फौंटवालाः स्टोन टु मोबाइल, अब क्या बचा?*

यह शो भारतीय अक्षर रचना की यात्रा को रोचक अंदाज में पेश करेगा, खासतौर पर देवनागरी भाषा की अक्षर रचना यात्रा को. शो यह भी पड़ताल करेगा कि जब इस विरासत को पत्थरों और धातुओं पर लिखा गया तब से आज तक जब भारतीय भाषाओं के अक्षर कई टैक्निकल माध्यमों में इस्तेमाल किए गए, क्या खो गया और क्या बचा. यूनीकोड, जिसने डिजिटल मोड में इन अक्षरों का इस्तेमाल आसान बनाया, के वजूद में आने से पहले भारतीय अक्षर रचना को काफी उलझा हुआ यानी 'कौम्पलैक्स' समझा जाता था.

टाइपफेस डिजाइनर और कैलीग्राफर राजीव खरे के अनुभव और नजरिए से जो पता चलता है वह यह कि ये दस्तावेज उन अग्रदूतों के बारे में बताते हैं जिन्होंने अक्षर रचना की विधा की सुंदरता को सहेज कर रखा. चुनौतियां जो सामने आईं एक माध्यम से दूसरे माध्यम के अनुरूप बनाने और इस्तेमाल करने लायक बनाने में वे भी महत्त्वपूर्ण रहीं और अक्षर रचना के क्षेत्र में पैदा होने वाली संभावनाओं को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. अक्षर रचना की विरासत को समायोजित करने के लिए तकनीकी सुधार भी महत्त्वपूर्ण पहलू है.

क्रिएटिव प्रोड्यूसर के तौर पर शुभ्रा टाइपफेस इतिहास के विस्तृत कंटेंट और राजीव प्रकाश खरे की इस के प्रति प्रतिबद्धता को सारभूत कर रही हैं.

**प्रदर्शनी आयोजनः**

**केलाइडोस्कोप डिजिटल आर्ट**

27 जुलाई से 17 अगस्त, 2019

सुबह 10:30 बजे से शाम 6:30 बजे तक (रविवार अवकाश)

केडीए, त्रिवेणी कला संगम

205, तानसेन मार्ग, मंडी हाउस, नई दिल्ली-110001.

**परिचय-** *फॉन्टवालाः स्टोन टु मोबाइल, अब क्या बचा?*

ब्राह्मी से देवनागरी के विकास और इस के पाषाण युग से डिजिटल स्क्रीन तक की यात्रा को 7 वीडियो में दर्शाया गया है. शुभ्रा प्रकाश और राजीव खरे अक्षरों और मात्रा के साथ इनकी रचना में निहित सुंदरता के गठजोड़ की परतों को उजागर कर रहे हैं. यह शो राजीव खरे की भारतीय अक्षर रचना के प्रति उस प्रतिबद्धता को दर्शाता है जिसमें बदलते युग में ये अक्षर डिजिटल दुनिया में प्रवेश कर रहे हैं. उन्होंने अपने प्रयासों को भारतीय भाषाओं की उस अखंडता को सहेजने पर केंद्रित रखा है जिसे अक्षर रचना के अग्रदूतों ने रचा था ताकि प्रिंटिंग प्रेस से कंप्यूटर और मोबाइल स्क्रीन तक इनका मूल रूप बना रहे. पढ़ने वालों ने इस बदलाव को उतनी गंभीरता से नहीं लिया जो अभी भी तकनीक की चुनौतियों और पढ़ने में आसान अक्षर रचना से जुड़ा है.

फॉन्ट का आकार और अक्षर रचना की डिजाइन इस मामले में बेहद महत्त्वपूर्ण है कि उसे अलगअलग माध्यमों पर किस तरह अपनाया गया. राजीव खरे ने अपने काम में इस पर काफी ध्यान दिया कि अक्षर रचना और भाषा की सुंदरता और संस्कृति का मूल रूप बना रहे. सांस्कृतिक संरचना को आगे ले जाने में भाषाओं की बेहद अहम भूमिका है. आलेख कम्युनिकेशन का वह माध्यम है जो इसे आमजन तक पहुंचाता है.

भाषाओं का कमजोर पड़ना संस्कृति को भी नुकसान पहुंचाता है. ऐतिहासिक तौर पर भी यह देखा गया है कि लोकल स्क्रिप्ट के विकल्प जिनसे छेड़खानी की जाती है वे आलेखों, भाषाओं और संस्कृति के क्षय का कारण बनते हैं. आज के दौर में रोमन स्क्रिप्ट के जरीए एशियन स्क्रिप्ट को सुविधाजनक तरीके से अलगअलग माध्यमों में इस्तेमाल किया जाता है.

राजीव खरे, जो कि बचपन से अक्षरों के प्रति रुचि रखते हैं, आर्टिस्ट व टैक्नीक दोनों तरह से हर माध्यम को खंगाला है- फिर चाहे वह दीवार पर बना इश्तिहार हो या फिर उद्योगों के लिए सौफ्टवेयर डिजाइन. उनका देवनागरी में निहित अक्षरों के प्रति प्यार ऐसा है कि वे उनकी आंखों के सामने हर दम तैरते रहते हैं. वे अपनी इन कल्पनाओं को अपनी अक्षर रचना में उतारते हैं ताकि वे पढ़ने में सुविधाजनक भी हों और उनकी अखंडता पर भी कोई आंच न आए. उनका कहना है, *''यह काम तब तक अधूरा है जब तक कि यह पढ़ने वाले तक पहुंचे नहीं और उसकी समझ में न आए.''*

क्यूरेटर मुक्ता अहलूवालिया का कहना है, *''मुझे समकालीन कला की ताकत और उन तकनीकों पर पूरा भरोसा है जो समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकें. फॉन्टवाला के जरीए से लोग देवनागरी और ब्राह्मी आलेख की उस सुंदरता को भी लोग देख सकेंगे जिसे वे नहीं देख पाए. हो सकता है लोगों ने इन प्राचीन आलेखों के डिजिटलीकरण को गंभीरता से न लिया हो. यह शो अक्षरों के प्रति राजीव खरे की निष्ठा और अक्षर रचना के अग्रदूतों के प्रयासों को एक ठहराव देता है.''*

केडीए के फाउंडर बॉबी बेदी का कहना है, *''डिजिटल कला को हर तरह से महसूस करने की आजादी देता है. यह भी है कि डिजिटल आर्ट को मूल रूप में कई लोगों द्वारा बनाई और साझा की जा सकती है. केडीए यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि किसी भी आयु का आर्टिस्ट अपने डिजिटल विजन को शेयर करने का अवसर पा सकें.''*

**आर्टिस्ट परिचय**

**राजीव प्रकाश खरे**

कैलीग्राफर और टाइपोग्राफर के तौर पर राजीव का प्रशिक्षण सुप्रसिद्ध कैलीग्राफर और आज की डिजिटल इंडियन लैंगवेज के जनक प्रोफेसर आर.के. जोशी व गुजरात टाइप फाउंड्री, मुंबई के फाउंडर श्री गोपाल भाई मोदी के संरक्षण में हुआ. 1990 में राजीव ने टाइप डिजाइन सॉफ्टेवयर कंपनी वीसॉफ्ट की स्थापना की और भारत सरकार के नामी संस्थानों के साथ काम किया.

1980 में उन्होंने मनोहर कहानियां और माया पत्रिकाओं के लिए कैलीग्राफिक हेडलाइंस डिजाइन कीं. बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में अपनी फाइन आर्ट्स की पढ़ाई के दौरान उन्होंने कैलीग्राफर और लेटरिंग आर्टिस्ट के तौर पर कई विज्ञापन संस्थानों में काम किया. उन्होंने आईडीसी आईआईटी मुंबई से परास्नातक किया जहां उन्होंने ऐडवांस टाइपोग्राफी और टाइप डिजाइन की शिक्षा ली.

आईडीसी आईआईटी में पढ़ाई के दौरान ही उन्होंने डॉट मैट्रिक्स प्रिंटर के लिए अपना पहला हिंदी फॉन्ट डिजाइन किया. उन्होंने यह प्रोजेक्ट एनसीएसटी मुंबई के डा. पी.के. मुदुर और आर.के. जोशी के निरीक्षण में पूरा किया. इसके बाद उन्होंने लेजर प्रिंटर के लिए आईडीसी राजीव नौर्मल हिंदी फॉन्ट डिजाइन किया.

राजीव का उद्देश्य हैलवेटिका फॉन्ट से मिलताजुलता मोनो थिकनेस हिंदी फॉन्ट बनाना था जो बाइलिंगुअल टैक्सट प्रॉसेस में इस्तेमाल किया जा सके. यह फॉन्ट 1989-90 में भारत सरकार के पोस्टल डिपार्टमेंट की कारपोरेट आईडैंटिटी के तौर पर इस्तेमाल किया जाता रहा. इसके बाद अपनी परास्नातक की पढ़ाई के दौरान ही उन्होंने आईडीसी राजीव फॉन्ट की पूरी फैमिली नौर्मल इटैलिक, बोल्ड और बोल्ड इटैलिक फौंट्स के रूप में तैयार की.

राजीव खरे टाइपफेस की दुनिया की सारी संभावनाओं को तलाशना चाहते थे, चाहे टाइप डिजाइनर हो, टाइप कैलीग्राफर हो, टाइप उद्यमी हो या फिर टाइप यानी अक्षरों का इस्तेमाल करने वाला. टाइपोग्राफी को बहुमूल्य 33 साल देने के बाद भारत में असर रचना के बदलावों के कई दौर उन्होंने अनुभव किए.

राजीव की उत्सुकता और रुचि आज की हाथ से लिखी कैलीग्राफी, हौट मेटल कंपोजिंग आज की हाई रिजोल्यूशन डिस्प्ले डिवाइसों में है. एक बच्चे कलाकार के तौर पर उन्होंने कई पब्लिकेशन संस्थानों, किताबों और साहित्य उत्सवों के लिए आर्टवर्क डिजाइन किए. वे तकनीक में ऐसे सुधार और नवीनीकरण के पक्षधर हैं जिसके द्वारा उन भारतीय आलेखों और अक्षरों को समायोजित किया जा सके जो लाखों लोगों की भाषा बनते हैं. वे आज भी अपना अनुभव और सेवा भारतीय भाषाओं की अक्षर रचना को देने को तत्पर हैं ताकि अक्षर रचना विकास में नई संभावनाओं को तलाश किया जा सके.

**शुभ्रा प्रकाश**

शुभ्रा प्रकाश एक थिएटर आर्टिस्ट हैं जिन्होंने हाल ही में 'दि म्यूजिक इन माई ब्लड' प्ले का सहलेखन व प्रस्तुतिकरण किया. यह प्ले इंडियन क्लासिकल म्यूजिक पर आधारित था जिसे न्यूयार्क सिटी एरिया और ईस्ट कोस्ट के हजारों लोगों ने देखा. शुभ्रा ट्रिबेका न्यू मीडिया फंड के सहयोग से चलाए गए एक मल्टीप्लेटफौर्म प्रोजेक्ट 'प्रिया की शक्ति में बतौर वौइसओवर आर्टिस्ट सेवा दे चुकी हैं. इस संस्था ने 400 प्रेस व मीडिया संस्थानों को उल्लेखित किया. इन्होंने पुरस्कार प्राप्त न्यूयार्क में स्थित हिपोक्रिट थिएटर कंपनी की भी सहखोज की. कंपनी के लिए इस के शुरुआती साल 2015 में फैस्टिवल डायरेक्टर के तौर पर साउथ एशियन इंटरनेशनल परफौर्मिंग आर्ट फैस्टिवल में भी शुभ्रा ने काम किया.

शुभ्रा हाल ही में भारत आईं ताकि अपने अगले प्ले फॉन्टवाला पर काम कर सकें जो कि राजीव प्रकाश खरे के जीवन से प्रभावित है. राजीव शुभ्रा के अंकल हैं और शायद वह कारण भी कि शुभ्रा ने कम उम्र में ही कला के महत्त्व को समझ लिया. थिएटर मेकर होने के साथसाथ वे हालिया प्रदर्शनी के लिए बतौर वीडियो प्रोडक्शन मेकर, स्क्रिप्ट राइटर, फिल्म निर्माता, संपादक और एनीमेटेड कंटेंट मेकर के तौर पर काम कर रही हैं.

**केडीए के बारे में**

कैलाइडोस्कोप डिजिटल आर्ट- केडीए की खोज वर्षा और बॉबी बेदी ने की थी. यह एक ऐसी प्रयोगधर्मी जगह है जहां कलाकार अपने दायरों को तोड़ कर अपने काम से जुड़ी बदलती तकनीक के नवीनीकरण और प्रस्तुतीकरण के लिए काम करता है. इसके अंतर्गत डिटिजल फोटोग्राफी, वीडियो, फिल्म, साउंड और एनिमेशन सब कुछ आता है.

यह कला क्षेत्र के टाइम बेस्ड डिजिटल डाक्यूमेंटेशन और उनके प्रस्तुतीकरण को भी दर्शाएगा. केडीए एक नॉट फॉर प्रॉफिट संस्थान है जो कलाकारों को रेंट फ्री जगह उपलब्ध कराता है और डिजिटल आर्ट फॉर्म के दर्शक जुटाने की सुविधा देता है.

मुक्ता अहलूवालिया के कलात्मक निर्देशन में यह संस्थान आर्ट मेकिंग तकनीक की अनछुई क्षमताओं और उभरते कलाकारों की कम्युनिटी तैयार करने पर केंद्रित है. केडीए ऐसे कार्यक्रम चलाने को भी उत्सुक है जो कलात्मक विकास की जानकारी, उनसे जुड़ी बातों से लोगों को शिक्षित करने का काम कर सकें.

**साक्षात्कार**

आर्टिस्ट राजीव प्रकाश खरे और शुभ्रा प्रकाश के साथ क्यूरेटर साक्षात्कार के लिए उपलब्ध हैं. यहां इस्तेमाल की गईं तस्वीरें सिर्फ प्रेस रिलीज के संदर्भ में हैं.

**संपर्कः**
PR Team at Kaleidoscope Digital Art KDA
Email: kdaenquries@gmail.com.
Mb: +91 9999651085
Artists: Rajeev Prakash Khare and Shubra Prakash
Emails: rajeevfontwala@gmail.com; prakashnitza@gmail.com
Mb: +91 9599967044, +91 9999755889.

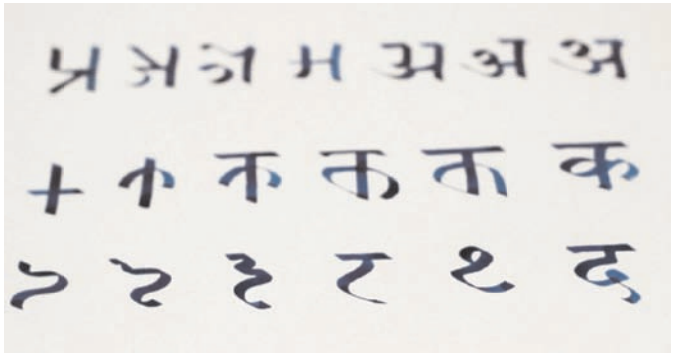

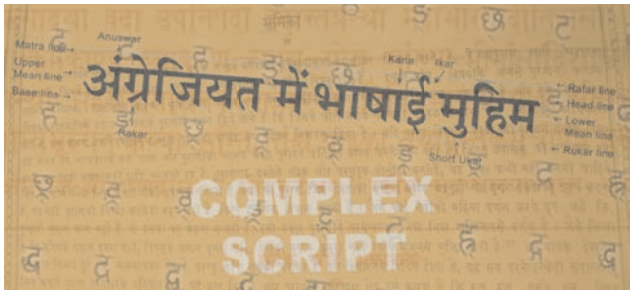
अंग्रेजियत में भाषाई मुहिम
COMPLEX
SCRIPT

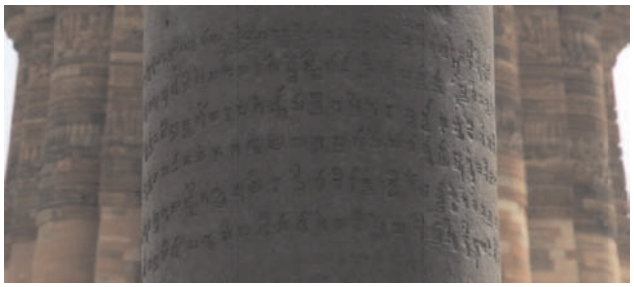

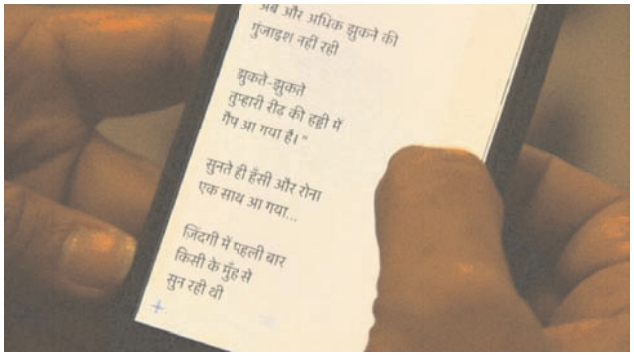
अब और अधिक झुकने की
गुंजाइश नहीं रही
झुकते-झुकते
तुम्हारी रीढ़ की हड्डी में
तैप आ गया है।"
सुनते ही हँसी और रोना
एक साथ आ गया...
जिंदगी में पहली बार
किसी के मुँह से
सुन रही थी

राजीव प्रकाश खरे

शुभ्रा प्रकाश